इजता दी रोटी तू खवाई साइयाँ

इजता दी रोटी तू खवाई साइयाँ किसे दा मोहताज न बनाई साइयाँ,
खैर सदा रेहमता दी पावइ साइयाँ,किसे दा मोहताज न बनाई साइयाँ,

दुनिया जहां विच इहो कुझ राखियां हसदे नाल एथे हर कोई हस्या,
रोंदेया नु कला न रवाई साइयाँ,किसे दा मोहताज न बनाई साइयाँ,

हक़ ते हलाल वाली रूखी सुखी चंगी है,
तेरे तो हमेशा असा इहो मंग मंगी है,
पाप दी कमाई तो बचावी साइयाँ किसे दा मोहताज न बनाई साइयाँ,

अपने पराये जेहड़े खुशिया दे साथी ने,
दुखा च ओ लाम्बे ओहि दिंदे दिन राति ने,
सुखदुख विच तू निभाभी साइयाँ,
किसे दा मोहताज न बनाई साइयाँ,

जिंदगी जे साहनु दिति ईजाता दी साइयाँ मौत भी तू साहनु देवे इज़ाता दी साइयाँ,
बेड़ी सदी साहिला ते लावी साइयाँ,
किसे दा मोहताज न बनाई साइयाँ,

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/11844/title/ijaata-di-roti-tu-khwavi-saiyan

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |